Dated 20|08|2020

B.A Part - 1 (H) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

मोक्ष का स्वरूप तथा उसके साधन

भारतीय दार्शनिकों की भाँति सांख्य भी दुःख के नष्ट मानव का परिहार से मुक्ति के साधन का ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन का एकमात्र उद्देश्य समझता है। सांख्य ने मोक्ष का अर्थ किसी बाह्य वस्तु या लोक की प्राप्ति नहीं बताया, बल्कि पुरुष का अपना स्वरूप का ज्ञान ही मोक्ष एवं उसका अज्ञान ही बंधन बतलाया है। ज्ञान से तात्पर्य सांख्य का मौलिक ज्ञान है। सांख्यकारिका में लिखा है :- "दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासातदपघातकेहेतौ।" अर्थात तीन प्रकार के अभिघात के कारण उनके विनाश के हेतु निमित्त जिज्ञासा होती है। संसार में प्राणियों को सदैव तीन प्रकार के दुःख आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक की प्राप्ति होती रहती है। आध्यात्मिक दुःख के अन्तर्गत सांख्य वैसे दुःखों को मानता है जो शरीर तथा मन के द्वारा हम तक पहुँचता है। जैसे बुखार, दर्द, अतिसार ये शारीरिक दुःख हैं तथा प्रिय से बिछुड़न और अप्रिय का मिलन ये मानसिक दुःख है। आधिभौतिक दुःख के अन्तर्गत सांख्य वैसे दुःखों को रखा है जो हमें बाह्य भौतिक बाधाओं से प्राप्त होते हैं जैसे- पशु-पक्षी द्वारा या आकस्मिक घटना द्वारा मिला दुःख। आधिदैविक दुःख के अन्तर्गत सांख्य ने वैसे दुःखों को रखा है जो हमें दैविक शक्ति के कुपित होने से प्राप्त होते हैं। जैसे- भूत-प्रेतादि, ग्रहादि के कारण दुःख। दुःख की निवृत्ति के लिए तत्वज्ञान आवश्यक है। 'व्यक्त' 'अव्यक्त' प्रकृति एवं पुरुष का ज्ञान हो जाने पर मनुष्य दुःख से सदा के लिए छुटकारा पा जाता है। इस प्रकार इन तीनों का ज्ञान कराकर मोक्ष की सम्प्राप्ति कराना ही सांख्य का प्रमुख उद्देश्य है।